वसीयत नामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए।
अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए।। ६ ।।

वसीयतनामे भी मक्के से आए हैं। उन्होंने भी इस बात की गवाही दी कि ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी आएंगे। वह समय भी अब आ गया है।

कई किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी मांहें इन।
आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन।। ७ ।।

हिन्दुओं के भी कई धर्म-ग्रन्थों में गवाहियां लिखी हैं कि धनी आकर असत का अज्ञान मिटाकर सत का ज्ञान देंगे।

देखो कई साखें धनीय की, भी देखो अनुभव आतम।
कई साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम।। ८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! धनी की गवाहियों को देखो और अपनी आत्मा से अनुभव करो। धनी ने कृपा करके जो गवाही कुरान में देकर भेजा है उसको भी देखो।

और हदीसों में कई साखें, कई वसीयत नामे साख।
कई किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख कई लाख।। ९ ।।

हदीसों में तथा वसीयतनामों में कई तरह की गवाहियां दी हैं। हिन्दुओं के भी कई धर्मग्रन्थों में अलग-अलग भाषाओं में अनेक गवाहियां दी हैं।

कई साखें साधो संतो, बोले बानी आगम।
कहे ना सकूं तुमको साथ जी, दोष देख अपना हम।। १० ।।

कई साधु-सन्तों ने भी अपनी भविष्यवाणी से कहा है। हे सुन्दरसाथजी! हम अपना ही दोष देखते हैं। तुमको कहां तक कहें?

एक साखें आवे ईमान, कई साखें देनें बांधे बंध।
तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध।। ११ ।।

एक गवाही से ही ईमान आ जाना चाहिए। यहां तो हर जगह हर ग्रन्थों में हर भाषा में गवाहियां दे रखी हैं। हमारा हृदय ही कुछ ऐसा अन्धा हो गया कि हमें ईमान नहीं आया।

देखो विचार के साथ जी, साख दई आतम महामत।
सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! विचार करके देखो। मेरी आत्मा ने गवाही दी है। जहां तारतम वाणी पहुंच जाएगी वहां सब सुन्दरसाथ की भी आत्मा गवाही देगी कि मैं खुदा हूं (चौपाई ४)

॥ प्रकरण ॥ ९८ ॥ चौपाई ॥ १४७१ ॥

राग श्री

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।। १ ।।

मेरी बुद्धि को, चित्त को, तन को और मन को धिक्कार है, जिन्होंने धाम-धनी को याद नहीं किया और आठों पहर रात-दिन जहर भरी माया में ही लगे रहे।

Nijanand App

मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।। २ ।।

धनी ने निज अखण्ड घर की पहचान कराई। जहां सुन्दरसाथ श्री राज श्यामाजी साक्षात् बैठे हैं, उस अखण्ड के आराम (सुख) को माया के बदले गंवा दिया।

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम।। ३ ।।

धनी ने मेरी निसबत उस अखण्ड घर से की जहां बेहद अखण्ड सुख हैं। उस आराम को भी मैं भूल बैठी।

खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम।। ४ ।।

धाम-धनी ने यहां आकर मुझे इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का खिताब दिया और बहिश्तों को कायम करने का अधिकार दिया। इसकी गवाही कुरान से दिलवाई।

अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम।। ५ ।।

मैंने अपने मूल अखण्ड घर के सुखों को छोड़ दिया। मुझे धनी का इश्क नहीं आया और मैंने झूठी हराम माया को पकड़ लिया।

खोल खजाना धनिएं सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान।
सो ए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान।। ६ ।।

धनी ने तो परमधाम का सब खजाना बख्श दिया, पर मेरे अन्दर ईमान ही नहीं आया, उस निधि को मैंने माया के संग से अज्ञानता के अन्धकार में गंवा दिया।

उमर खोई अमोलक, मोह मद क्रोध ने काम।
विखया विखे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम।। ७ ।।

मैंने काम, क्रोध, मोह और मद में अपना अनमोल जीवन गंवा दिया और माया के विषैले स्वादों में लगी रही। माया में लिप्त होने से सब अंग खाक हो गए।

अब अंग मेरे अपंग भए, बल बुध फिरी तमाम।
गए अवसर कहा रोइए, छूट गई वह ताम।। ८ ।।

अब मेरे अंगों की शक्ति समाप्त हो गई और बुद्धि का बल भी जाता रहा। अब हाथ से वह अवसर निकल जाने पर आत्मा का धन छिन गया।

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।। ९ ।।

धनी ने बेहद से परे सब द्वार खोलकर मूल घर की पहचान करा दी। अब धनी ने ऐसी कृपा की कि मेरे अन्दर कोई संशय नहीं रहा।

बोहोत कह्या घर चलते, वचन न लागे अंग।
इन्द्रावती हिरदे कठिन भई, चली न पिउ जी के संग।। १० ।।

श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने धाम चलते समय बहुत समझाया पर मुझ पर असर नहीं हुआ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मैं हृदय की ऐसी कठोर हो गई कि अपने प्रीतम के साथ जा नहीं सकी।

Nijanand App

तब हार के धनिएं विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तब हार कर धनी ने ही विचार किया कि मैं अपनी अंगना को क्यों छोडूं? तब मेरे टूटे हुए हृदय में आकर विराजमान हुए।

।। प्रकरण ।। ९९ ।। चौपाई ।। १४८२ ।।

धनी एते गुन तेरे देख के, क्यों भई हिरदे की अंध।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद।। १ ।।

हे धनी! आपकी इतनी कृपा देखकर भी मेरा हृदय अन्धा बना रहा। कई गवाहियां लेकर भी मैं इसी माया के फन्द में लगी रही।

कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फुरमान।
कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन।। २ ।।

धनी की, कुरान की और शास्त्रों की दिल में कई गवाहियां लीं।

कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रह्मांड।
आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड।। ३ ।।

साधुओं की वाणी और अपने अनुभव से मैंने अपने दिल को अखण्ड परमधाम में लगाकर देखा।

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।
धनी मुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख।। ४ ।।

पार के रहने वाले जितने सुन्दरसाथ हैं, उन सबने गवाही दी। तब अपने ऊपर धनी की कृपा देखी उसका क्या वर्णन करूं? उससे अखण्ड घर नजर आया।

कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार।
तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार।। ५ ।।

कई गवाहियां सोच-सोचकर दीं और पुकार-पुकारकर मुझे समझाईं पर मेरे कलेजे में कोई चोट नहीं लगी। मेरा जन्म व्यर्थ चला गया।

कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब।। ६ ।।

कई गवाहियां और अपने मुख से धनी की कृपा का वर्णन औरों को सुना-सुनाकर उम्र बिता दी, फिर भी मेरी आत्मा जागृत नहीं हुई तो औरों को क्या कहूं? क्या सुनाऊं?

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत।
क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत।। ७ ।।

हे धनी! अब घर वापस आने में कोई समय बाकी न रहा। उसकी भी आपने पहचान करा दी है। अब घर आकर जब आपके चरणों में लगूंगी तो आपके सामने मुंह कैसे ऊंचा करूंगी?

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन।। ८ ।।

हे धनी! जैसे-जैसे आपने कृपा की, वैसे-वैसे मैंने अवगुण किए। फिर भी आपने तो मेहर ही की मैंने तो फिर भी बाधाएं ही डालीं।

Nijanand App